नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'टैगोर और गांधी : बौद्धिक संघर्ष, मैत्री और भारत चिंता' पर प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी का व्याख्यान

वर्धा, 11 अक्टूबर 2018: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में

महात्मा गांधी के जन्मदिवस के 150 वर्ष पूरे होने पर सारस्वत कार्यक्रम के अंतर्गत विशिष्ट व्याख्यानों की शृंखला बुधवार, 10 अक्टूबर से शुरू हुई, जिसमें 'टैगोर और गांधी : बौद्धिक संघर्ष, मैत्री और भारत चिंता' विषय पर व्याख्यान संपन्न हुआ। व्याख्यान की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। व्याख्यान के वक्ता प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी थे। उनका स्वागत करते हुए भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं आयोजन के संयोजक प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने व्याख्यान माला की

पृष्ठभूमि तथा विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत की ।

प्रो. चौधुरी ने गांधी एवं टैगोर दोनों को 'मॉडर्न रिजेनरेशन' का पक्षधर बताया। उन्होंने गांधी और टैगोर के आपसी संबंधों के बारे में बताते हुए कहा कि जब गांधी पहली बार टैगोर से शांति निकेतन में मिले, तो उन्होंने रवींद्रनाथ से वहाँ के छात्रों के जाति के आधार पर अलग-अलग भोजन और स्वावलंबन (सेल्फ-हेल्फ) के बारे में पूछा। इस पर टैगोर ने गांधी से कहा कि वे जातिभेद नहीं मानते हैं लेकिन अपने विचारों को विद्यार्थियों पर नहीं थोपना चाहते हैं। इसके अलावा प्रो.चौधुरी ने गांधी और टैगोर से जुड़े अनेक संस्मरणों जैसे- जालियाँ वाला बाग के समय गांधी और टैगोर दोनों का अपना सम्मान वापस करना, इंदौर हिंदी सम्मेलन के समय गांधी का पत्र के माध्यम से हिंदी के संबंध टैगोर की राय मांगी थी, इसके उत्तर में टैगोर द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा कहा गया था। असहयोग आंदोलन के समय टैगोर द्वारा शांति निकेतन के छात्रों को राजनीति से दूर रखने की बात, गांधी द्वारा गुजराती साहित्य सभा की अध्यक्षता के लिए टैगोर को आमंत्रित करना, जिसमें गांधी के आग्रह पर टैगोर ने हिंदी में अपना भाषण दिया था, आदि उद्धरणों के द्वारा गांधी और टैगोर की मैत्री, वैचारिक असहमतियों और भारत-चिंता के संबंध में दोनों के विचारों के महत्त्व को रेखांकित किया और यह बताया कि दोनों अपने समय के दो अलग-अलग व्यक्तित्व होते हुए भी भारत के इतिहास में किस तरह पूरक हैं। इस क्रम उन्होंने दोनों को आमने-सामने खड़ा करके बाइनरी ढंग से देखने पर ऐतराज जताया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि 'गांधी और टैगोर दोनों ने रचनात्मक ढंग से समाज को तलाशने का प्रयास किया। दोनों ने अपने-अपने ढंग के सर्जनात्मकता के चरम को दिखाया। दोनों के जीवन में परमेशवर की बड़ी भूमिका थी। शायद ही कोई ऐसा रचनाकार होगा जो विभिन्न विधाओं में इतनी बड़ी मात्र में प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए रचना की हो। दोनों अपने लेखन में वैश्विक मनुष्य को संबोधित करते हैं।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर वृषभप्रसाद जैन, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. देवराज, महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार, कुलानुशासक डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, भाषा विद्यापीठ के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. एच. ए. हुनगुंद, डॉ. अनिल दुबे, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रो. अवधेश कुमार, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. धूपनाथ प्रसाद, डॉ. मनोज कुमार राय, स्त्री अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सुप्रिया पाठक, दूर शिक्षा के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. अमरेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. शंभू जोशी, डॉ. संदीप सपकाले तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों **एवं** केंद्रों के प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। सत्र का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया।

##

माननीय संपादक/संवाददाता
महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।